प्रकाशन की तिथि 01.06.2019

ओ३म्

एक प्रति मूल्यः रू. 4.00

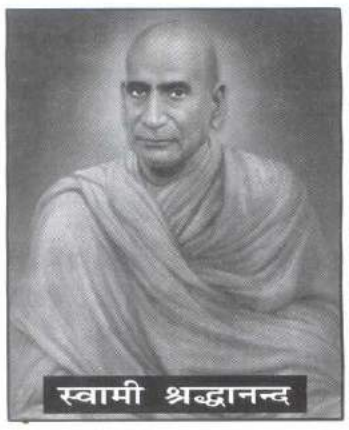

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 42 अंक 6

''शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है''

वार्षिक शुल्क : 50 रूपये
आजीवन शुल्क : 500 रूपये

जून 2019 विक्रम सम्वत् 2076 ज्येष्ठ-आषाढ़

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाताः श्री हरबंस लाल कोहली श्री चतर सिंह नागर श्री विजय गुप्त श्री सुरेन्द्र गुप्त

प्रबन्धकः श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

बलिदान दिवस (6 जून) पर विशेष

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

भारतीय संस्कृति में जहां एक ओर देवताओं की आराधना की गई है वहीं देवियों की वन्दना भी। हमारे यहां ईश्वर धर्म की स्थापना और दुष्टों के विनाश के लिए मनुष्य रूप में अवतरित होता आया है, तो देवी परमेश्वरी ने भी नारी रूप धारण कर दुष्टों का विनाश किया है। भगवान शिव ने समाज में शांति और सुव्यवस्था कायम करने के लिए त्रिपुर राक्षस का विनाश किया तो दुर्गा ने घोर संग्राम में परम तेजस्वी शक्तिशाली महिषासुर का संहार कर देवताओं का कल्याण किया।

गौतम, कणाद, वशिष्ठ, वाल्मीकि, गर्ग, भृगु, भारद्वाज के नाम आदर के साथ लिए जाते हैं तो गार्गी, मैत्रेयी, सीता, सावित्री, अनसुइया, अरून्धती, लोपामुद्रा के नाम भी सम्मान के साथ याद किए जाते हैं। जब तक आकाश में सूर्य और चन्द्रमा का उदय होता रहेगा, जब तक हिमालय स्थिर रहेगा और गंगा प्रवाहित होती रहेगी तब तक ये देवियां भी भारतीय जनमानस से अलग नहीं हो सकती।

हमारी देवियों ने केवल आध्यात्म दर्शन, समाज और साहित्य के क्षेत्र में ही उल्लेखनीय कार्य *नहीं किया बल्कि युद्ध* और वीरता के क्षेत्र में भी भारतीय ललनाओं का विश्व में कोई मुकाबला नहीं कर सकता। राजस्थान की हजारों देवियों ने अपनी जाति, धर्म और संस्कृति की प्रतिष्ठा के लिए जौहर व्रत का पालन करके इतिहास में अमर स्थान प्राप्त किया है। युद्ध में जिन अनेक देवियों ने शत्रुओं के दांत खट्टे किये, उनमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई अग्रगण्य है। सर ह्यू रोज ने रानी की प्रशंसा में अपनी डायरी में लिखा है-'महारानी का उच्चकुल, आश्रितों और सिपाहियों के प्रति उनकी असीम उदारता और कठिन समय में भी अडिग धीरज, उनके इन गुणों ने रानी को हमारा एक अज्ञेय प्रतिद्वन्द्वी बना दिया था। वह शत्रु दल की सबसे बहादुर और सर्वश्रेष्ठ सेना नेत्री थी।'

सन् 1842 में उनका विवाह झांसी के मराठा शासित राजा गंगाधर राव निम्बालकर के साथ हुआ और वे झांसी की रानी बनी। विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। सन् 1851 में रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया पर चार महीने की आयु में ही उसकी मृत्यु हो गयी। सन् 1853 में राजा गंगाधर राव का स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ जाने पर उन्हें दत्तक पुत्र लेने की सलाह दी गयी। पुत्र गोद लेने के बाद 21 नवम्बर 1853 को राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गयी। दत्तक पुत्र का नाम दामोदर राव रखा गया।

ब्रिटिश राज ने बालक दामोदर के खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। यद्यपि मुकदमे में बहुत बहस हुई परन्तु इसे खारिज कर दिया गया। ब्रितानी अधिकारियों ने राज्य का खजाना जब्त कर लिया और उनके पति के कर्ज को रानी के सलाना खर्च में से काटने का फरमान जारी कर दिया। इसके परिणामस्वरूप रानी को झांसी का किला छोड़ कर झांसी के रानीमहल में जाना पड़ा। पर रानी लक्ष्मी ने हिम्मत नहीं हारी और उन्होंने हर हाल में झांसी राज्य की रक्षा करने की निश्चय किया।

झांसी 1857 के संग्राम का एक प्रमुख केन्द्र बन गया जहां हिंसा भड़क उठी। रानी लक्ष्मी ने झांसी की सुरक्षा को सुदृढ़ करना शुरु कर दिया और एक स्वयंसेवक सेना का गठन प्रारंभ किया। इस सेना में महिलाओं की भर्ती की गयी और उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। साधारण जनता ने भी इस संग्राम में सहयोग दिया। झलकारी बाई जो लक्ष्मीबाई की हमशक्ल थी को उसने अपनी सेना में प्रमुख स्थान दिया।

1857 के सितम्बर तथा अक्टूबर माह में पड़ोसी राज्य ओरछा तथा दतिया के राजाओं ने झांसी पर आक्रमण कर दिया। रानी ने सफलता पूर्वक इसे विफल कर दिया। 1858 के जनवरी माह में ब्रितानी सेना ने झांसी की ओर बढ़ना शुरु कर दिया और मार्च के महीने में शहर को घेर लिया। दो हफ्तो की लड़ाई के बाद ब्रितानी सेना ने शहर पर कब्जा कर लिया। परन्तु रानी दामोदर राव के साथ अंग्रेजों से बच कर भाग निकलने में सफल हो गयी। रानी झांसी से भाग कर कालपी पहुंची और तात्या टोपे से मिली।

तात्या टोपे और रानी की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक किले पर कब्जा कर लिया। 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रिटिश सेना से लड़ते-लड़ते रानी लक्ष्मीबाई ने वीरगति प्राप्त की। लड़ाई की रिपोर्ट में ब्रिटिश जनरल ह्यरोज ने टिप्पणी की कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिए उल्लेखनीय तो थी ही विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक भी थी। महारानी लक्ष्मीबाई का कुशल योद्धा और वीरांगना के अलावा एक योग्य प्रशासिका, पतिव्रता और ममतामयी जननी थी। जीवन भर में वे अपने पति श्री गंगाराव के प्रति निष्ठावान रही। मरने पर उनकी परंपरा को कायम रखा और अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को सदा एक स्नेहमयी मां के समान जहां गई पीठ पर बांधे रही।

19 नवम्बर 1835 ई. के दिन काशी में एक बालिका का जन्म हुआ। इस बालिका का नाम मणिकार्णिका था, जिसे प्यार से मनु कहते थे। इसके पिता का नाम मोरोपंत और माता का नाम भागीरथीबाई था। यही बालिका बाद में झांसी क...

(शेष पृष्ठ 6 पर)

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ओ महाराणा प्रताप अठै

हम राष्ट्र विटप के रखवाले,
जीवन का मोह बिसार दिया।
माटी से सींचा मरण तंत्र,
तिल-तिल जलने से प्यार किया॥
राष्ट्रभिमान के मन्दिर का हम,
सदियों से पूजन करते।
श्रद्धा से नित भारत माँ का,
सब हिल-मिल कर वन्दन करते॥

भारत की भूमि देव भूमि है, अवतारों कीभूमि है। जहाँ भगवान स्वयं अवतार लेते हैं और अधर्म का नाश करने व धर्म की विजय के लिए स्वयं कष्ट सहन करते हुए दुष्टों का विनाश करते हैं। यहाँ महापुरुषों का जीवन त्याग, बलिदान एवं लोकहित की साधना में ही समर्पित रहा है। देश-समाज और धर्म की रक्षा के लिए महापुरुषों ने अपने बलिदान दिये लेकिन सिद्धान्तों के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। चाहे भगवान राम का समय था, भगवान श्रीकृष्ण का, मुगलों के आक्रमण का काल या अंग्रेजों के राज्य का समय, हर समय में किसी न किसी महापुरुष ने जन्म लेकर इस भारत माता की रक्षा की है।

जब जब राष्ट्रीय अस्मिता और
गौरव पर प्रबल प्रहार हुए।
तब देव शक्तियाँ जाग उठीं,
छिड़ गये समर संहार हुए॥

रामचरितमानस में कहा है ''विप्र, धेनु, संव हित, लीन्ह मनुज अवतार'' और गीता में श्रीकृष्ण ने कहा ''यदा यदा ही धर्मस्य.....।'' ऐसे महापुरुषों को स्मरण करना, उन्हें नमन करना तथा उनके जीवन से प्रेरणा लेना, हम सभी का कर्त्तव्य है जिन्होंने मातृभूमि की बलिदेवी पर हँसते हँसते प्राण न्यौछावर कर दिये।

भारत भूमि पर सर्वत्र मुगल मतान्धता का बोलबाला था। धर्म, संस्कृति व माँ बहिनों का सतीत्व संकट में था। मंदिर टूट रहे थे, उसमें रखी देव प्रतिमाएँ तोड़ी जा रही थी, नरसंहार हो रहा था, अधर्म का साम्राज्य चारों और फैल रहा था। संस्कृति के रक्षक ही भक्षकों के साथ रोटी, बेटी का सम्बन्ध जोड़ रहे थे। ऐसे समय देश की स्वाधीनता तथा माताओं-बहिनों के सतीत्व की रक्षा हेतु, कालरात्रि के घोर कष्टों का निवारण करके भारत में हिन्दवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हेतु, कुम्भलगढ़ में राणा उदयसिंह के घर ज्येष्ठ सुदी 3 रविार विक्रम सम्वत् 1567 तदनुसार 6 मई 1540 ई. को एक बालक ने जन्म लिया, जिसका नाम रखा गया प्रतापसिंह। उस समय भारतवर्ष पर मुगल बादशाह अकबर का आधिपत्य था। बड़े-बड़े राजा महाराजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली तथा मुगलों से विवाह सम्बन्ध भी स्थापित कर लिये थे। मेवाड़ ही एक राज्य था जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

राणा प्रताप बचपन से ही वीर थे। मुगलों के अत्याचार से मुक्ति कैसे मिले यह संस्कार उन्हें अपनी माता से मिले। प्रताप 16-17 वर्ष की आयु में सैनिक अभियानों में जाने लगे। प्रताप ने अकबर के सामने सिर झुकाना स्वीकार नहीं किया। अपने संकल्प के कारण जीवन भर प्रताप को अकबर से युद्ध करना पड़ा। महाराणा प्रताप ने प्रतिज्ञा की कि जब तक चित्तौड़ के दुर्ग सहित सम्पूर्ण मेवाड़ पर स्वराज्य स्थापित नहीं होगा-''मैं राजप्रासाद में नहीं रहूँगा, पतल-दोनों में ही भोजन करूँगा, भूमि पर ही मेरी शैय्या होगी।'' महाराणा की प्रतिज्ञा से सभी नागरिकों के मनों में देशभक्ति की प्रबल भावना का संचार हुआ। मेवाड़ी वीरों का संकल्प इन पंक्तियों में व्यक्त हुआ-

जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में माँगे मातृभूमि से यह वर। तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें ना रहें।

अकबर ने महाराणा प्रताप से मिलने के बहुत प्रयास किये। उसने आमेर के राजकुमार मानसिंह को महाराणा से संधि हेतु भेजा किन्तु वह भी सफल नहीं हुआ। राजा मानसिंह ने महाराणा प्रताप को कहा कि वे सम्राट अकबर के दरबार में प्रस्तुत हों, लेकिन उस स्वाभिमानी वीर पुरुष ने उत्तर दिया-''वीर पुरुषों का कार्य धर्म स्थापना के लिए युद्ध करना है, किसी की अधीनता स्वीकार करना नहीं, वीर सदैव शत्रु से रणभूमि में भेंट कर अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराता है अथवा वहीं अपने प्राण त्याग देता है।' 18 जून 1576 के दिन महाराणा प्रताप ने हल्दी घाटी के रणक्षेत्र पर अपने सैनिकों को धर्म व मातृभूमि की रक्षार्थ युद्ध हेतु सन्नद्ध किया। महाराणा प्रताप और मुगलों के मध्य हुए इस प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध में न केवल मेवाड़ी वीरों का शौर्य दर्शनीय था, अपितु प्रताप के स्वामिभक्त अश्व चेतक ने भी अलौकिक साहस का प्रदर्शन किया-

वह महाप्रतापी घोड़ा उड़ जंगी
हाथी को हबक उठा,
भीषण विप्लव का दृश्य देख,
भय से अकबर दल दबक उठा,
क्षण भर देखा उस चेतक ने
दो पैरों पर हो गया खड़ा,
फिर अगले दोनों पैरों को
हाथी मस्तक पर दिया गड़ा।

प्रताप अकबर के सेनापतिमानसिंह को युद्ध भूमि में खोज रहे थे। रणभूमि में इधर-उधर दौड़ लगाते हुए चेतक मानसिंह के हाथी के सामने पहुँच गया और पलक झपकते ही अगले दोनों पैर हाथी के मस्तक पर रख दिये। राणा का भाला बिजली की भाँति चमका, मानसिंह ने काठी के पीछे दुबककर अपनी जान बचाई और उसके स्थान पर महावत मारा गया। इस महासमर में इतना रक्त बहा कि हल्दीघाटी में रक्त तालाब बन गया। वह स्थान आज भी रक्तलाई के नाम से विश्वप्रसिद्ध है-

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट काट कर,
करता था सफल जवानी को।

इस युद्ध में महाराणा प्रताप मुगल सैनिकों के घेरे में आ गये। उनके सरदार झाला मानसिंह ने राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिये महाराणा के जीवित रहने के महत्व को समझा और राणा का जीवन बचाने हेतु स्वयं प्रताप का राजकीय वेश धारणा कर महाराणा को वहां से निकल जाने का निर्देश दिया। इतिहास में यह प्रथम अवसर था जब सहयोगी अपने नेता को निर्देश देता है और नेता राष्ट्रधर्म के हित में उस निर्देश को सहर्ष स्वीकार करता है। महाराणा चेतक पर सवार होकर हल्दीघाटी से नाला पार कर रहे थे, स्वामीभक्त चेतक घायल था, चल नहीं पा रहा था, परन्तु स्वामी की प्राणरक्षा करनी है, अत: एक छलांग लगाई और नाला पार कर लिया, लेकिन वहीं गिर पड़ा। वीर चेतक ने सदैव के लिए आँखें मूंद ली, प्रताप अश्रुधारा नहीं रोक पाये। आज भी हल्दीघाटी में उस स्थान पर खड़ा चेतक का स्मारक शौर्य और स्वाभिमान का स्मरण करा रहा है। अकबर चला गया, मानसिंह भी चला गया किन्तु वे मेवाड़ को कभी अपने अधीन नहीं कर सके। अकबर की पराजय पर मेवाड़ी वीरों ने कहा-

युगों-युगों से यही हमारी, बनी हुई परिपाटी है,
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।

महाराणा प्रताप वीर एवं साहसी योद्धा ही नहीं कुशल प्रशासक, संगठनकर्ता, निर्मल चरित्र के धनी एवं चतुर कूटनीतिज्ञ भी थे। महाराणा प्रातप ने अपनी संगठन कुशलता से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मातृभूमि को स्वतन्त्र बनाये रखने के लिए आजीवन संघर्ष किया। उनकी कुशलता और उनके

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

राष्ट्र के कर्णधार युवा

– आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

आँखों में भविष्य की कल्पनाएं, बाजुओं में नवीन रूधिर से भरी ऊर्जा, मुट्ठियों में काल के प्रवाह को रोक देने की क्षमता, तनी भृकुटि पर आक्रोश की खींची रेखाएँ, ओठों पर खेलती मोहक मुस्कान, मन में आकाश छूने वाली तरंगें, अनुभव विहीन मस्तिष्क में विश्वास पूरित ऊहा, कुछ गुन-गुनाहट, कुछ खिल-खिलाहट, कुछ तरंगे, कुछ उमंग, कुछ मोहक सपने, कुछ विद्वेष से भरी खीझ, इन्द्र धनुषी रंगों में खोयी डूबी कुछ कल्पनाएँ, कुछ दीवानगी भरे कदम, इन सबको मिलाकर एक शब्द में कहा जाए तो वह है-युवा अवस्था। मादकता से पूरित अलमस्त जावानी। ये जीवन का सबसे मूल्वान क्षण है। शबनम की तरह खूबसूरत परन्तु तुहिन बिन्दु सा ही क्षणिक।

युवा शरीर में नवीन ऊर्जा शक्ति का स्त्रोत इठलाता रहता है, उसमें सदा नूतन बिजलियाँ कौंधती रहती है। इसीलिए युवा कदमों को रोक पाना, या दिशा दे पाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। युवाओं की फड़कती शक्ति को सही मार्ग पर लाकर ही देश के भवन की भित्ति को सुदृढ़ किया जा सकता है। युवा स्तर जहां मादक और मोहक होता है वहीं वह विध्वंसक और विनाशक भी होता है। युवा जहाँ अनुसरण करने वाला दीवाना होता है वहीं वह परम्पराओं और मर्यादाओं को तोड़ने वाला विद्रोही भी होता है।

आज का युवक, पथ-भ्रान्त, आत्म-ग्लानि से खीझता, तोड़ फोड़ और विध्वंस से दहकता, नशे की लतों में ढूबता, जीवन की समस्याओं से भागता, जमाने भर से शिकायत करता, कुण्ठाओं से भरा अनुशासन और शीलवृत्त को भंग करता नजर आ रहा है। आज वह एक दोराहे पर खड़ा है जहां उसे राह नजर नहीं आ रही है। अश्लीलता की आग में उसका मन और मस्तिष्क झुलस रहा है। तरह-तरह के दुर्व्यसनों से उसका नैतिक पतन हुआ जा रहा है। आज आवश्यकता है उसे नैतिकता, संयम, अनुशासन और कर्तव्य बोध कराया जाये। आज आवश्यकता है नव भारत के निर्माण करने की। इसके लिए उन चरित्रवान् बलिदानी वीरों की आवश्यकता है जो अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए कह सकें 'वयं तुभ्यं बलिहतः स्याम।' हम तुझ पर बलिदान करने वाले हों। आन-बान-शान के प्रतीक, चरित्र के तप से प्रदीप्त, श्रम की बूंदों से अभिषिक्त। युवाओं से ही इस राष्ट्र का उत्थान हो सकता है। हम विस्मृति गर्त से अपनी महान् संस्कृति को पुनर्जीवित करें। हम अपने ज्ञानी विज्ञानी ऋषि मुनियों की संस्कृति को जिसमें भौतिक सुख के साथ आध्यात्मिक आनन्द की संयुक्त धारा है, उस भागीरथी को पुनः प्रवाहित करें। आज भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, अज्ञान, अन्ध परम्पराएँ, दुराचार, अभाव दानव फिर जाग उठा है। उससे इस देश को बचाना आज के युवा का ही कर्तव्य है। आज के युग में आय के साधन सीमित हैं। व्यय निरन्तर वृद्धि पर है। व्यक्ति अनुचित ढंग से धन की प्राप्ति में आचार भ्रष्ट हो जाता है। आज तन ढाँकने से अधिक ऊपरी दिखावे पर खर्च होता है। विलासिता और मादकता पर अधिक खर्च होता है। इसलिए युवाओं को ही सन्तोष और संयम सीखना पड़ेगा। स्वामी रामतीर्थ ने कहा था-

मेरे भारत के होनहार युवकों! भारत का भविष्य ही तुम्हारा भविष्य है और इसके निर्माण का दायित्व तुम्हारे कन्धों पर है।

उठो! जागो! अपने देशवासियों को जगाओ। सूर्योदय से पूर्व ही अपने कर्तव्य का निर्धारण कर लो और अपने कर्मपथ पर अग्रसर हो जाओ। एक क्षण भी वृथा मत गवाओ। यदि तुम आलस्य या प्रमाद में डूबे रहे तो सूर्य पश्चिम को चला जायेगा, तब तुमसे कुछ भी न हो सकेगा।

उठो! अतीत को वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालो और साहसपूर्वक अपने पवित्र संकल्प से शक्तिशाली वर्तमान को उज्जवल भविष्य की दौड़ मैं नियोजित करो।

मेरे देश के भावी कर्णधारों! आगे बढ़ो!! पुरानी अकर्मण्यता पर विजय प्राप्त करो, जहां परिवर्तन की आवश्यकता है वहां परिवर्तन करो और जहां गति की आवश्यकता है वहां गति लाओ। निर्बाध गति से लक्ष्य की ओर बढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ जब तक सफलता तुम्हारे चरण न चूम ले।

हमें अपने विगत के महान् आदर्शो के अनुसार अपने जीवन को ढालना होगा। हम वर्तमान समय के कायरता युक्त विचारों को त्याग कर मातृभूमि के हित राष्ट्रीय गौरव से ओतप्रोत आत्मविश्वास और समर्पण के भव्य-भावों को अपने श्वास प्रश्वास में बसाये हुए सच्चे जीवन्त युवक बने।

हमारे आदर्श है वे पूर्व पीढ़ी के लोग जिन्होंने देश की आजादी का युद्ध लड़ा था। वे भी युवक थे जिन्होंने फांसी के फन्दों को देखकर मस्ती भरे गीत गाये थे। जिन्होंने राष्ट्रयज्ञ में अपने तन की समिधा जलायी थी। उन्होंने आजादी की पुरवा हवा हमारे लिए बहायी जिससे हम सुखपूर्वक साँस ले सकें। मित्रों! आज फिर देश की एकता और अखण्डता पर चोट पड़ी है। आज फिर भारत माता के शरीर पर घाव उकेरे जा रहे हैं। आर्य वीर देश की आजादी के लिए लड़े। चाहे वह भगतसिंह थे या रामप्रसाद अथवा चन्द्रशेखर थे मदनलाल धींगरा, सुभाष चन्द्र बोस या अशफाकउल्ला। वह चाहे लाजपतराय थे या श्याम जी कृष्ण वर्मा वह चाहे दयानन्द थे या श्रद्धानन्द। आज उनके अनुयायियों को चाहिए कि कि वे राष्ट्रवादी युवकों का आह्वान् करें। जो देश से साम्प्रदायिक आग को मिटायें, देश के गद्दारों को सजा दें जो भारत की शान्ति को दृढ़ करें। राष्ट्र की मुख्य धारा में सब को जोड़ सकें। वैसे भी युवा उम्र से नहीं होता। उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द के शब्दों में युवक कौन हैं?

बुजुर्ग की पहचान बुद्धि है, उम्र नहीं। बूढ़े बेवकूफ भी होते हैं। उसी तरह जवानी की पहचान उम्र नहीं, कुछ और है। हम उसे जवान नहीं कहते, जिसकी उम्र 18 से 25 तक हो, जो सिर से पाँव तक फैशन में सजा हुआ, विलासिता का दास, जरूरतों का गुलाम, स्वार्थ के लिए गधे को बाप कहने को तैयार हो, वह जवान है न बूढ़ा, वह मृतक है, जिससे न जाति का उपकार हो सकता है न देश का भला। हम जवान उसे कहते हैं, जो बीस का हो या चारबीस का हो, पर हो हिम्मत का धनी, दिल का मर्द, आन पर अपनी मर जाये पर किसी का एहसान न ले, सिर कटा दे, झुकाये नहीं, जो कठिनाइयों से डरे नहीं, बाधाओं से बचे नहीं, बल्कि उनमें कूद पड़े। 6 महीने का सुगम मार्ग पर चलकर 6 दिन का जान जोखिम का मार्ग पकड़े। नदी के किनारे नाव के इंतेजार में खड़ा न हो बल्कि उछलती लहरों पर सवार हो जाये।

सच्चा हीरा कौन सा?

एक राजा के दरबार में हीरों का एक व्यापारी आया। उसके पास एक जोड़ी हीरे थे। उनमें एक सच्चा हीरा था और दूसरा पहले की हूबहू नकल का था। व्यापारी ने चुनौती दी कि जो दोनों में से सच्चा हीरा पहचानेगा वही उसका मालिक होगा। दोनों हीरे बिल्कुल सामान्य थे। उनकी चमक भी एक समान थी। सच्चे हीरे को पहचानना मुश्किल था। अचानक एक अन्धा व्यक्ति आगे आया। उसने छूते ही पहचान लिया कि सच्चा हीरा कौन सा है? सब हैरत में थे। राजा ने उससे पूछा तो उसने कहा, सच्चा पहचानना बहुत आसान था। नकली हीरा गर्म वातावरण में गर्म हो जाता है, परन्तु असली हीरा हर मौसम में एक समान रहता है। ठीक, इसी प्रकार, जो व्यक्ति हर स्थिति में अपना सन्तुलन बनाये रखता है, वही मानव, मानव-समाज का **सच्चा हीरा** है।

-सुभाषचन्द्र आर्य

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) पर विशेष

पर्यावरण भारतीय शास्त्रों में

पर्यावरण शग्द-परि+आवरण इन दो शब्दों की संधि से बना है, परि का अर्थ है चारों ओर। आवरण से अभिप्रेत है वातावरण-चारों ओर के वातावरण को पर्यावरण कहते हैं।

वेद कालीन समाज में केवल पर्यावरण संबंधी चर्चा ही नहीं अपितु इसके संरक्षण के महत्व को भी स्पष्ट किया गया है।

वेद की ऋचाएं:- अथर्ववेद में पृथ्वी को माता कहा गया है। इसके पुत्रों ने इसके साथ आत्मीय तथा पारिवारिक संबंध स्थापित किया है। वेद कहता है, **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'**

भूमि माता की रक्षा तथा जीवन पर्यन्त इससे अभिन्न संबंध स्थापित करना मेरा वैसा ही कर्तव्य है जैसा मेरी जननी के प्रति जिसने मुझे जन्म दिया। इस संबंध में आधुनिक कवियों ने भी अपने भाव व्यक्त किये है:-

'खा अन्न और जल तेरा मां
यह अंग सकल हैं बड़े हुए।
तेरी ही वायु से माता यह श्वास है,
अब तक अड़े हुए।

वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन की विषय सामग्री का अथाह भण्डार है। प्रकृति का प्रत्येक कार्य एक स्वाभाविक और नियमित प्रणाली से कार्य का श्रेष्ठ उदाहरण है जैसे दो मित्र एक सिक्के के दो पहलु हैं, वैसे मनुष्य और प्रकृति का संबंध भी अभेद है।

यजुर्वेद कहता है: 'प्रकृति और मनुष्य दो मित्र हैं।' मानव प्रकृति को सम्बोधित कर कहता है-मित्रवर मेरा तुम्हारा अटूट रिश्ता है। मैं तुम्हारी प्रत्येक दृष्टि को पूर्ण करने में कभी पीछे नहीं रहूंगी।' अन्त में दोनों मिलकर कहते हैं-'हम एक दूसरे के सहायक, संरक्षक तथा समायोजित भाव से जीवन यापन करेंगे।

ऋग्वेद की ऋचाएं स्पष्ट संदेश देती हैं।

(क) मा काकम्वीर मुरदहो वृहोवनस्पतिन शस्तीर्विहीनशः'।

वृक्ष काकादि पक्षियों के आश्रय स्थल हैं। संपूर्ण प्राणियों को खाद्य सामग्री इन्हीं से प्राप्त होती है। वे वर्षा का मूल कारण और प्रदूषणों के निवारक हैं। अतः वृक्षों का आरोपण तथा संरक्षण मानव जाति का धर्म है।

(ख) ऋग्वेद में आह्वान भी किया है-**'यतते भूमोविश्वनाभिक्षिप्तं तदपि रोहतु'** विश्व में जितनी भी भूमि खाली पड़ी है, सब पर वृक्षारोपण करो।

(ग) वेदों में वनस्पतियों से उत्पन्न औषधियों को माता के समान कल्याणकारी बताया गया है। ऋग्वेद-**'औषधीरिति मातरः तदवो देवीरूप ब्रुते।'** अथर्ववेद ने भी इसी भावना को पुष्ट करते हुए कहा है- **वीरूधो वैश्व देवीः उग्राः पुरुष जीवनीः।**

वृक्ष, जन्तु, जगत् के जीवन का मूलाधार है, मनुष्य का जीवन भी वृक्षों के बिना संभव नहीं है।

ऋग्वेद के अनुसार नदियां, तन, मन और आत्मा को निर्मल कर स्फूर्ति और ऊर्जा प्रदान करती हैं। वन, भूतल की प्राकृतिक छतरी तथा राष्ट्र की जीवन रेखा होते हैं। वृक्षों का प्रगतिशील होना राष्ट्र का प्रतीक माना गया है।

उपनिषद्-ईशोपनिषद् में कहा गया है कि पृथ्वी पर (जगत्) चराचर जो भी वस्तु है, ईश्वर से आच्छादित है, इसके कण-कण में दिव्यता है।

1. ईशावस्यमिदं सर्व यत्किंचित् जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुंजीथा, मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

कोई भी वस्तु नहीं है, जो ईश्वर में न हो और जिसमें ईश्वर न हो। परमपिता सर्वव्यापी है। ईश्वर प्रदत्त सब पदार्थो का भोग ईश्वर का प्रसाद समझ कर करना पुण्य है। दूसरों की सामग्री तथा अस्तित्व छीनकर भोग करना पाप है।

2. यावहय यिभ्रयेत जठरं तावत् स्वत्वं ही देहिनाम् अधिकं योऽभिमन्यते स स्तेना दण्डमर्हति॥

उपनिषद्कार कहता है कि जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है। प्राणियों के लिए अपना पेट भरने के लिए जितना आवश्यक है, उतना ही उनके लिए अपेक्षित है। उससे अधिक की कामना करने वाला चोर है तथा दण्ड का भागी है।

3. उपनिषदों के अनुसार हवा, पानी अग्नि, वृक्ष और जड़ी बूटियों में ईश्वर का अवस्थान है। ये देवता हैं, आराधना करने योग्य हैं।

चरक संहिता- दुर्लभ कृति चरक संहिता में कहा गया है-'जब तक इस धरती के वन्य, पशुओं और हरे भरे पेड़ पौधों के बीच प्रकृति का लीला-विलास चलता रहेगा, तब तक मानव जाति फलती फूलती रहेगी।'

मनु- मनु महाराज ने प्रजाजनों को कहा है-'जो प्रकृति हमें इतना सब कुछ देती है तथा जिसकी कृपा से संपूर्ण जगत् पोषित और जीवित है, हम सदा उसकी रक्षा करें। उसकी रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का नैतिक दायित्व है।'

यज्ञ-विधान-वैदिक काल से ही हम पर प्रकृति की कृपा बनाये रखने के लिए मनु ने यज्ञ को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया है। यज्ञ का प्रयोजन पृथ्वी के चक्र को बना कर रखने के लिए किया गया है।

अग्नौ प्रस्ताहूतिः सम्यगदिव्यभु प्रतिष्ठते।
आदित्याज्जंतें वृष्टिश्वरष्टेरंत्रंप्रजाः॥

अग्नि में डाली आहुति सूर्य की किरणों में उपस्थित होती है। उसके संसर्ग से अन्तरिक्ष में इस प्रकार का वातावरण निर्मित हो जाता है जिससे मेघों का संग्रह होने लगता है वे समय पाकर पृथ्वी पर बरसते हैं। औषधि, वनस्पति, लता, फल, खाद्य जीवन शक्तियां, अग्नि, पृथ्वी, वायु, सूर्य, चन्द्र पृथ्वी एवं जल के रूप में हमारे संरक्षण तथा संवर्धन के लिए प्राप्त होते हैं।

'अग्नि वै देवानां मुखम्' अग्नि देवताओं का मुख है। देवता पदार्थों को प्राप्त करते हैं और वह आहुति देने वाले को लौटा देते हैं।

'देहि मे ददामि ते'

मनुस्मृति में फिर से कहा गया है-जो व्यक्ति वनस्पतियों को जिस प्रकार चोट पहुंचाता है, ऐसे दोषी व्यक्ति को संबंधित क्षेत्र के राजा द्वारा दोष के अनुरूप दण्डित किया जाना चाहिए।

- दीनानाथ वत्रा

प्रेम

- ❑ प्रेम की आंखें हैं और हृदय भी किन्तु वाणी नहीं।
- ❑ प्रेम पहली निगाह या पहली मुस्कान में दो आत्माओं को संयुक्त करता है, दो शरीरों को नहीं। यदि उसने दो शरीरों को युक्त किया है तो निश्चय ही वह प्रेम नहीं है, विषय और विकार है।
- ❑ प्रेम केवल वियोग में बोलता है और दोनों ओर से प्रत्येक कहता है, 'तू पुनः आयेगा/आएगी क्योंकि मैं तुझे अब भी प्यार करता/करती हूँ।'
- ❑ प्रेम में भेदभाव नहीं। दोनों में से प्रत्येक दूसरे का प्रेमी है और प्रेमाधार भी।

छत्रपति शिवाजी के राज्याभिषेक दिवस पर विशेष-

भारत के महान् राष्ट्रपुरुष शिवाजी महाराज

छत्रपति शिवाजी जन्म वैशाख शुक्ल द्वितीया वि.सं. 1684, राज्याभिषेक ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी वि.संत्र 1731। छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित करने योग्य घटना है। मुस्लिम आक्रान्ताओं से रणक्षेत्र में पराजय मान चुका भारतीय नृप समाज मानसिक रूप से भी उनकी अधीनता स्वीकार कर चुका था। मुस्लिम आतंकवाद चरम पर था। लोगों की निराशाएँ तत्कालीन बड़े-बड़े विद्वान पंडितों द्वारा रचित इन पंक्तियों से प्रकट होती हैं-

दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा मनोरथान् समर्थः। अन्येन केनापि नृपेणदत्तं शाकाय वा स्यात् लवणाय वा स्यात्।।

अर्थात्-''दिल्ली का बादशाह ही जगदीश्वर है, वही सभी के मनोरथ पूर्ण कर सकता है, अन्य राजागण तो शाक या लवण भी कदाचित ही दे सकें।'' ऐसी विकट परिस्थिति में आशा की एक किरण के रूप में शिवाजी का उदय हुआ। शिवाजी ने मावले युवकों को संगठित कर स्वयं की एक सेना बनाई तथा मुगलों की अधीनता से भारत को मुक्त कराकर एक स्वतन्त्र हिन्दू साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न देखा। अपने स्वप्न को साकार करने हेतु उन्होंने गुरिल्ला युद्ध का विकास कर मुगलों से तोरण, चाकर, कोंडाणा तथा पुरन्दर दुर्गो पर सहज रूप से अधिकार कर लिया। अनेक मुगल योद्धा तथा सेनापतियों को पराजित कर दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के मन में भय उत्पन्न कर दिया। उन्होंने अपने अधीन जनता पर सुशासन स्थापित किया तथा स्वदेश, स्वदेशी भाषा (मराठी तथा संस्कृत) का गौरव बढ़ाया। तत्कालीन विचारवान लोगों ने देश और धर्म की रक्षा हेतु शिवाजी को राजा के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहा। देश के तत्कालीन प्रसिद्ध विद्वान गागाभट्ट अपनी विद्वत मण्डली सहित काशी से शिवाजी का राज्याभिषेक करने आये। शिवाजी को छत्रपति (प्रजापालक) की उपाधि से विभूषित किया गया जिसे उन्होंने अपने जीवन के कृत्यों द्वारा सार्थक बनाया। शिवाजी की तुलना एक ओर स्वाधीनता के सूर्य महाराणा प्रताप से की जा सकती है तो दूसरी ओर वे भगवान श्रीराम जैसे प्रजापालक तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण के समान कूटनीतिज्ञ थे। शिवाजी महाराज ने सुप्त वृद्ध भारत में नवचैतन्य का संचार किया था। वे भारत के महान राष्ट्र पुरुष थे।

छत्रपति शिवाजी महाराज की अश्वारूढ़ मूर्ति का अनावरण समारोह, 30 नवम्बर 1657 भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू के कर कमलों द्वारा किया गया था। इस अवसर पर श्री नेहरू द्वारा दिये गए भाषण का सम्पादित अंश शिवाजी के राज्यारोहण दिवस ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी (इस बार 2 जू7 2012) के उपलक्ष्य में प्रकाशित कर रहे हैं। पं. नेहरू के इस भाषण से यह भी स्पष्ट होता है कि अंग्रेज इतिहासकारों ने किस प्रकार से हमारे गौरवशाली इतिहास को कुत्सित ढंग से प्रस्तुत किया।

शिवाजी का शुभ्र चरित्र-छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे भारत के महान् सुपुत्र का गौरव करते समय मेरा मन प्रसन्न हुआ है। चित्तवृत्ति पुलकित हुई है, और हृदय हर्ष से भर आया है। साथ ही सैकड़ों वर्ष पूर्व घटी हुई ऐतिहासिक घटनाएँ मेरी आँखों के सन्मुख सरलता से दृष्टिगोचर हो रही हैं। आज से तीन सौ वर्ष पहले श्री शिवाजी महाराज ने स्वतन्त्रता के लिए शस्त्र उठाया। उनका अंतिम ध्येय था भारत का स्वातंत्र्य। स्वतन्त्रता के प्रति सदैव प्रयत्नशील यह महापुरुष केवल किसी प्रान्त का अथवा जाति का हो ही नहीं सकता, अपितु वह पूरे भारत का है।

पहले मैंने अंग्रेजी इतिहासकारों की पुस्तकें पढ़ी थीं। उनमें इस प्रकार प्रतिपादन किया गया था कि शिवाजी महाराज ने अफजलखान को धोखे से मार डाला था। बारबार मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि इस महापुरुष के हाथों इस प्रकार की भूल कैसे हुई? बाद में मेरे अध्ययन में बंगाली और महाराष्ट्रीय इतिहासकारों की पुस्तकें प्राप्त हुई। विपुल ऐतिहासिक साधनों का परिश्रम से अभ्यास कर उन्होंने इन पुस्तकों को लिखा था। उन्हें मैंने पढ़ा और मेरे मन का संदेह का पटल दूर हुआ।

स्वतन्त्रता का समर्थन- मुझे और एक बात कहने की इच्छा होती है। कुछ लोग समझते हैं कि छत्रपति शिवाजी महाराज को मुस्लिमों के विरूद्ध लड़ाई करनी थी। मेरा ऐसा मत है कि उनके सम्मुख हिन्दू और मुस्लिम इस प्रकार का झगड़ा नहीं था। बल्कि सारे देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न था। छत्रपति शिवाजी का पूरा इतिहास कहता है कि मुस्लिम धर्म के प्रति उन्हें जरा भी द्वेष नहीं था। बल्कि सारे देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न था। छत्रपति शिवाजी का पूरा इतिहास कहता है कि मुस्लिम धर्म के प्रति उन्हें जरा भी द्वेष नहीं था। उनके पास बहुत से बड़े-बड़े मुस्लिम अधिकारी थे। छत्रपति शिवाजी महाराज का युद्ध यदि मुस्लिमों के विरूद्ध रहता, तो एक भी मुस्लिम उनके पास न रहता। औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जिझिया लगाने के बाद शिवाजी महाराज ने उनको जो पत्र लिखे हैं वे अमर हैं। उनमें औरंगजेब के सन्मुख उन्होंने उनके पूर्वजों का उदाहरण रखकर इस प्रकार की अन्यायी बातों से परावृत्त होने के लिए बारबार आग्रह किया था। इन पत्रों में जीवन के बारे में शिवाजी महाराज के जो सिद्धान्त थे, वह यथार्थता से प्रतिबिंबित हुए हैं।

आज हम सब मिलकर छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें, उनका स्मरण करें और उनसे शक्ति और स्फूर्ति प्राप्त करें।

सपूत कौन?

एक गाँव की तीन स्त्रियाँ अपना-अपना घड़ा उठाकर पानी लेने जा रही थीं। वे चलती जातीं और बातें भी करती जातीं। एक स्त्री ने दूसरी से कहा-बहिन! मेरा लड़का पढ़-लिखकर बहुत प्रसिद्ध पंडित बन गया है। मैं ऐसे पंडित को जन्म देकर अपने को धन्य मानती हूँ। बाहर से कोई आता है तो मेरी ओर उंगली उठाकर दूसरों से कहता है-देखो-देखो, वही शास्त्री जी की मां हैं। पानी भरने जा रही हैं।

उसकी बातें सुनकर दूसरी स्त्री बोली-अरी सखी, मेरे लाल का हाल सुनो। वैसा पहलवान दस-पाँच गांवों में देखने को नहीं मिलता। मैं उसे हलवा-मालपूआ बनाकर दिन-भर खिलाती हूँ। खा-पीकर वह हाथी की तरह झूमता हुआ जब सैर-सपाटे को निकलता है तो मैं फूली नहीं समाती।

दोनों की बातें सुनकर तीसरी स्त्री चुप रही। इस पर एक ने कहा-तू चुप क्यों है? मालूम होता है तेरा लड़का लायक नहीं निकला। तीसरी स्त्री बोली-बहिनो, जैसा भी है, मेरे लिए बहुत अच्छा है। उसे नाम कमाने की लालसा नहीं है। वह सीधे स्वभाव का आदमी है, दिन भर खेतों में काम करता है, शाम को आकर घर के लिए पानी भर देता है। घर के काम से उसे इतनी छुट्टी ही नहीं मिलती कि वह बाहर नाम कमाए। आज मेरे बहुत कहने पर वह मेला देखने गया है, तभी मुझे पानी भरने आना पड़ा है। मुझे आज इधर आते देखकर देखनेवाले इसी बात पर आश्चर्य करते थे कि मुझे पानी भरने के लिए कैसे निकलना पड़ा।

तीनों की बातें समाप्त हुई तो वे जल्दी-जल्दी अपने-अपने घड़ों में पानी भर कर वहां से रवाना हुई। थोड़ी दूर से तीन नवयुवक आते दिखाई पड़े। वे तीनों उन स्त्रियों के लड़के थे, मेले से घर लौट रहे थे। एक ने (जो पंडित था) पहली स्त्री के पास जाकर कहा-माँ, मैं जल्दी घर भाग रहा हूँ, क्योंकि मुझे एक सेठ के घर नामकरण संस्कार कराने जाना है। दूसरे ने दूसरी स्त्री से कहा-माँ, मैं मेले के दंगल में बाजी मारकर आ रहा हूँ। जल्दी पानी लेकर घर आना, मुझे भूख लगी है। यह कहता हुआ वह भी आगे बढ़ गया। इसके बाद तीसरा युवक तीसरी के पास आया और उसके हाथ से पानी का घड़ा लेकर बोला-माँ, तू क्यों पानी भरने चली आई, मैं तो आ रहा था। घड़ा लेकर वह घर की ओर चला। यह देखकर बाकी दोनों स्त्रियाँ बोल पड़ी। बहन! असली सपूत तो तूने ही जना है, जो इतना सेवाव्रती और आज्ञाकारी बेटा है।

शिक्षा-केवल माँ के पेट से जन्म लेने से पुत्र नहीं कहलाया जाता। पुत्र कहलाने के लिए, माँ-बाप का आशीर्वाद और प्रभु का प्यार पाने के लिए, माता-पिता की सेवा करो, उनके आज्ञाकारी बनो।

- नरेन्द्र मोहन वलेचा

(पृष्ठ 2 का शेष)

लक्ष्य की पवित्रता के कारण ही भामाशाह जैसे धनी सेठ तथा वनवासी भील लोग उनके साथ हुए। भामाशाह ने इस संकट की घड़ी में सैन्य अभियान के संचालन हेतु 25 लाख रूपये नगद व 20 हजार स्वर्ण मुद्राएँ महाराणा को भेंट की। भामाशाह द्वारा राष्ट्र और धर्म की रक्षा हेतु दिये गये धन से महाराणा ने सैन्य संगठन सुदृढ़ किया। मेवाड़ के शौर्य और सैन्य शक्ति से भयभीत होकर मुगल पुन: कभी भी मेवाड़ पर पाँव नहीं रख पाये।

एक बार अकबर के दरबार में कुछ कवि अपनी कविता सुना रहे थे उसी समय मेवाड़ का एक चारण कवि भी अपनी कविता सुनाने दरबार में उपस्थित हुआ। उसके सिर पर केसरिया पगड़ी बंधी हुई थी। चारण ने उस पगड़ी को उतार कर अपने हाथ में ले लिया और तब सिर झुकाया। इस पर अकबर ने पगड़ी उतारने का कारण पूछा, चारण ने उत्तर दिया-''यह पगड़ी महाराणा प्रताप ने मेरे सिर पर बाँधी है। यह उनका सम्मान है जिसको आज तक कोई झुका नहीं सका, उस पगड़ी को मैं कैसे झुकाऊँ?'' तदोपरान्त चारण कवि ने दरबार में कविता सुनाई ''केसरिया पगड़ी झुके नहीं....।''

महाराणा प्रताप के भय के कारण अकबर की मानसिक स्थिति का वर्णन करते हुए कवि ने कहा-माई ऐहड़ा पूत जण, जैहड़ा राणा प्रताप। अकबर सूतो ओझके, जाण सिरहोन साँप।।

प्रताप का चरित्र निर्मल और महान था। दिवेर घाटी के युद्ध में सुलतानखां अमरसिंह के भालों से घायल हो गया। रणभूमि में घायल पड़ा सुल्तानखाँ पानी के लिए पुकार रहा था। यह सुनकर महाराणा ने अमरसिंह को गंगाजल लेकर भेजा, उसकी प्यास बुझाई। महाराणा प्रताप के इस उज्जवल चरित्र के सम्मुख मरणासन्न सुल्तानखाँ भी नतमस्तक हो गया। मिर्जा अब्दुल रहीम के परिवार को महाराणा के सैनिकों ने बंदी बना लिया। जब महाराणा को ज्ञात हुआ कि मिर्जा के परिवार में महिलाएँ भी है तो उन्होंने अमरसिंह से कहा, ''हम हिन्दू हैं, प्रत्येक नारी में माता के दर्शन करते हैं अत: तुरन्त इन नारियों को सम्मानपूर्वक इनके स्थान पर पहुँचा दो।'' महाराणा प्रताप ने 25 वर्ष तक मेवाड़ पर शासन किया। 57 वर्ष की आयु में माघ शुक्ल 11 विक्रम सम्वत् 1563 तदनुसार 16 जनवरी 1567 को उस महाज्योति ने अपने आपको दिव्य ज्योति में विलीन कर दिया। चावण्ड से डेढ़ मील दूर बड़ोली गाँव के निकट बहने वाले नाले के तट पर महाराणा का अंतिम संस्कार किया गया जो आजकल छेजड़ का तालाब के नाम से जाना जाता है। महाराणा के त्याग, अदम्य साहस, राष्ट्रभक्ति और उज्जवल चरित्र की गाथा देशवासियों को सदा प्रेरणा देती रहेगी।

-देवदत्त शर्मा

-1431, चाणक्य मार्ग, सुभाष चौक, जयपुर

-साभार गीता स्वाध्याय

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून पर

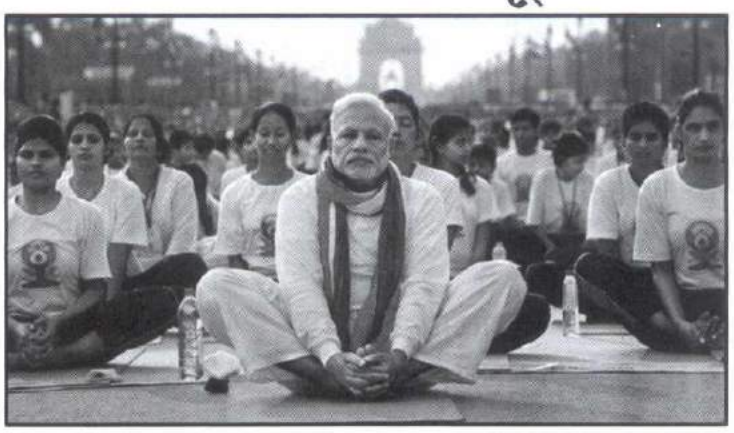

प्रस्तावना:-योग, मन, शरीर और आत्मा की एकता को सक्षम बनाता है। योग के विभिन्न रूपों से हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को अलग-अलग तरीकों से लाभ मिलता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को इस अनूठी कला का आनंद लेने के लिए मनाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एक पहल:-योग की कला का जश्न मनाने के लिए एक विशेष दिन की स्थापना का विचार प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रस्तावित किया था। इस पहल के माध्यम से भारतीय प्रधान मंत्री हमारे पूर्वजों द्वारा दिए गए इस अनोखे उपहार को प्रकाश में लाना चाहते थे। उन्होंने सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में अपने भाषण के दौरान इस सुझाव का प्रस्ताव दिया था। अपने संयुक्त राष्ट्र के संबोधन में उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि योग दिवस 21 जून को मनाया जाना चाहिए क्योंकि यह वर्ष का सबसे लंबा दिन है। यूएनजीए के सदस्यों ने मोदी द्वारा दिए गए प्रस्ताव पर विचार-विमर्श किया और जल्द ही इसके लिए सकारात्मक मंजूरी दे दी। 21 जून 2015 का दिन पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया गया। इस दिन भारत में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया था। भारत के प्रधान मंत्री श्री मोदी और कई अन्य राजनीतिक नेताओं ने राजपथ पर उत्साह के साथ यह दिन मनाया।

इस दिन देश के विभिन्न हिस्सों में कई बड़े और छोटे योग शिविर भी आयोजित किए गए थे। इस पवित्र कला का अभ्यास करने के लिए लोगों ने बड़ी संख्या में इन शिविरों में हिस्सा लिया। न सिर्फ भारत में बल्कि इस तरह के शिविरों का आयोजन दुनिया के अन्य हिस्सों में भी किया गया और लोगों ने बड़े उत्साह से इनमें भाग लिया। तब से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हर साल बहुत उत्साह से मनाया जाता है।

निष्कर्ष:-21 जून को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्राचीन भारतीय कला के लिए एक अनुष्ठान है। हमारे दैनिक जीवन में योग को जन्म देने से हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है। यह हमारे तनावपूर्ण जीवन के लिए एक बड़ी राहत प्रदान करता है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

रानी लक्ष्मीबाई कहलाई, जिसने भारत को स्वतन्त्र करवाने के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी थी।

झांसी राज्य की कुलदेवी महालक्ष्मी का झांसी में एक विशाल मंदिर था। इस मंदिर में पूजापाठ, कीर्तन उत्सव आदि के लिए दो गांव रानी लक्ष्मीबाई के नाम थे जो अंग्रेजों ने ले लिये थे। झांसी के किले में अब अंग्रेजी फौज आ गई थी। रानी इस अपमान में बौखला गई। वह अंग्रेजों को सबक देना चाहती थी। इन्हीं दिनों श्री तात्या टोपे रानी लक्ष्मीबाई से मिलने आए। उन्होंने रानी को अन्य राज्यों के समाचार सुनाए और बताया कि किस प्रकार भारत में अंदर ही अंदर अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही है। अब रानी घुड़सवारी करने के लिए महलों से बाहर भी जाने लगी। उनकी पोशाक मर्दाना होती थी। इन्हीं दिनों रानी की इच्छा अपनी जन्मभूमि काशी जाने की हुई पर डिप्टी कमीश्नर ने इसकी आज्ञा नहीं दी। लोगों में इस बात को लेकर काफी क्रोध फैला। रानी की तैयारी चल रही थी। दूसरे, राज्यों के समाचार उन्हें बराबर मिलते रहते थे। शास्त्रों का भंडार इकट्ठा किया जा रहा था। जासूसी गतिविधियां बढ़ रही थी। तात्या टोपे, नानी साहब तथा अंग्रेजों के विरोधी अन्य सामंत सरदार अपने-अपने तरीकों से काम कर रहे थे।

18 जून 1858 को अंग्रेजी फौज रानी की बहादुरी को देखकर दंग थे। पर किसी भी तरह इस मौके को हाथ से जाने देना नहीं चाहते थे। रानी अंग्रेजों के व्यूह को चीरती हुई साफ निकल गई। आगे नाला था। रानी का घोड़ा क्योंकि नया था, इसलिए वह अड़ गया। बहुत कोशिश करने पर भी वह आगे नहीं बढ़ा। इतने में पीछा करते कुछ अंग्रेज सिपाही रानी के पास आ पहुंचे। एक गोरे ने बंदूक से गोली दागी। गोली रानी को लगी। खून बहने लगा। पर रानी किसी भी तरह अंग्रेजों के हाथों में पड़ना नहीं चाहती थी। उन्होंने तलवार से उस गोरे को मौत के घाट उतार दिया। उनकी इच्छा थी कि मरने पर उनके शरीर को कोई अंग्रेज छूने न पाएं। अत: सिपाही पास कोई स्थित श्री गंगादास की कुटी में रानी को ले गए और भरी आंखों से उन्होंने रानी का अंतिम संस्कार कर दिया।

रानी लक्ष्मी बाई प्रथम स्वाधीनता संग्राम के क्रम में स्मरणीय रही है। अगर वे चाहती तो स्वयं और अपनी आने वाली पीढ़ियों को सुख सागर उपलब्ध करवा सकती थी, किन्तु उन्हें गुलामी की शानो शौकत की अपेक्षा स्वाधीनता के रक्षार्थ जूझना सुखप्रद लगा। अंग्रेज इतिहासकारों ने इस वीरांगना का चरित्र तक अपनी लेखनी से खराब करना चाहा। महज इसलिए कि उसने उनकी दासता स्वीकार नहीं की, उनके अखण्ड साम्राज्य को नहीं स्वीकारा, उन्हें चुनौती देने का साहस किया। जिसके लिये वे अमर हो गई और आजादी के दीवानों की प्रेरणा स्त्रोत बन गई।

-महेश चन्द्र शर्मा

माह-मई 2019 के आर्थिक सहयोगी

1.	आर्य समाज मॉडल वस्ती (शीदीपुरा) नई दिल्ली	6000/-वार्षिक
2.	आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1, नई दिल्ली	5000/-वार्षिक
3.	श्रीमती नीता कोहली जी, मयूर विहार एक्स. दिल्ली	5000/-वार्षिक
4.	ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर-15 ए, फरीदाबाद	1000/-मासिक
5.	आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	1000/- मासिक
6.	आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	800/- मासिक
7.	आर्य समाज इन्द्रानगर, बगलौर-कर्नाटक	750/- मासिक
8.	श्री चतर सिंह नागरजी, महामन्त्री, शुद्धि सभा	500/-मासिक
9.	श्री गौरी शंकर धवन जी, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/- दान
10.	श्री शिवकुमार मदान जी ट्रस्टी-जनकपुरी, नई दिल्ली	200/- मासिक
11.	श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	100/- मासिक

श्रीमती संतोष वधवा जी द्वारा एकत्रित दान-

1.	श्रीमती निर्मलकान्ता अधलखा जी, नारायण विहार, नई दिल्ली	500/-
2.	श्री प्रवीण भाटिया जी, एफ-ब्लॉक, नारायण विहार, नई दिल्ली (आजीवन)	500/-
3.	श्रीमती संतोष वधवा जी-ई ब्लॉक, नारायण विहार, नई दिल्ली	500/-
4.	श्रीमती सुमित्रा गुप्ता जी, नारायण विहार, नई दिल्ली	100/-
5.	श्री राकेश मल्होत्रा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-
6.	श्री रमेश मल्होत्रा जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-

श्री वी.के. गुप्ता जी (मुनिरिका नई दिल्ली) के द्वारा

1.	श्री वी.के. गुप्ता जी. डीडीए फ्लैट, मुनिरिका नई दिल्ली	500/-
2.	श्री नवल किशोर गुप्ता जी, डी.डी.ए., फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली	100/-
3.	श्रीमती पुष्पा गुप्ता जी, डी.डी.ए. फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली	100/-
4.	श्रीमती मोहिनी चड्ढा जी डी.डी.ए. फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली	100/-
5.	रक्षा अग्रवाल डी.डी.ए. फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली	100/-

आवश्यक सूचना

विभिन्न गुरुकुलों से पढ़े विद्यार्थी जो दिल्ली में एम.ए. एमफिल और बी.एड. करना चाहते हैं जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। उनको आर्य समाज राजेन्द्र नगर दिल्ली पढ़ाई और रहने में सहयोग करेगा। उन्हें समाज के यज्ञ सत्संग सेवा कार्यो में सहयोग करना वे ही छात्र सहायता के पात्र होगें जिनके अन्दर वैदिक धर्म व समाज के लिए निष्ठा, श्रद्धा और भावना होगी जिनका आचार विचार एवं रहन सहन गुरुकुीय पद्धति का होगा। इच्छुक विद्यार्थी दिनांक 30.06.2019 तक प्रार्थना पत्र दें एवं सम्पर्क करें-आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली, फोन-25760006

आध्यात्मिक सम्मेलन सम्पन्न

ऋषिवर दयाननद सरस्वती के संकल्पों को साकार करने में अहर्निह प्रयत्नशील डी.ए.वी. संस्थाएं भारत में आज भी नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक जागरण की पुरोधा बनी हुई है। वैदिक मनिषियों के शाश्वत सिद्धान्तों को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए पूर्ववर्षो की भांति इस वर्ष भी विद्यालय परिवार में आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन का प्रारम्भ आर्यजगत के विद्वान श्रीमान हरेन्द्र शास्त्री जी एवं श्री हरिदेव आर्य जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। श्री अशोक सहगल जी प्रधान राजेन्द्र नगर आर्य समाज की अध्यक्षता में आर्य समाज की नव कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती शालिनी अरोड़ा जी को प्रधान तथा श्रीमती सोनिया मलिक जी को मन्त्री हेतु निर्वाचित किया था-तथा अन्य सभा सदों की घोषणा की गई। इस असवर पर डॉ. महेश जी विद्यालंकार, बलदेव सचदेवा जी, श्री हरीश कलरा जी, श्रीमती उषा महान, तथा नवनिर्वाचित प्रधाना श्रीमती शालिनी अरोड़ा जी ने अपने सारगार्भित विचारों से उपस्थित जनों का मार्गदर्शन किया।

प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक गुरुकुल गढ़मीरकपूर मेरठ रोड, सोनीपत में 20 जून 2019 से प्रवेश प्रारम्भ होगें। पांचवीं पास छात्र प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रवेश होगा। छात्रों को भोजन आवास, शिक्षा *निःशुल्क प्रदान की जायेगी एवं सम्पर्क:-* **धूम सिंह शास्त्री, अधिष्ठाता,** मो. 9891142673

इसी गुरुकुल के लिए एक सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता है जो संस्कृत, व्याकरण पढ़ा सके। भोजन, आवास के अतिरिक्त उचित मासिक वेतन दिया जायेगा।

विकास व चरित्र निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में शनिवार 8 जून 2019 से रविवार 16 जून 2019 तक डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक चौहान के सान्निध्य में विशाल युवक व्यक्तित्व विकास व चरित्र निर्माण शिविर स्थान-ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सेक्टर-44, नोएडा (निकट बोटैनिकल गार्डन मेट्रा) में होगा। उद्घाटन समारोह-शनिवार 8 जून 2019 सायं 5 बजे 7 बजे तक, समापन समारोह, रविवार 16 जून प्रात: 11 बजे से 1.30 बजे तक।

- **अनिल आर्य,**मो. 9868051444

51 कुण्डीय महायज्ञ के साथ स्वामी दयानन्द जी का जन्मदिन

आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर के तत्वावधान में वेदोध्दारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान एवं अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मतव में ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों और वेदप्रचार, पर्यावरण शुद्धि, विश्वशान्ति एवं सुख समृद्धि हेतु 51 कुण्डीय महायज्ञ धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि अग्नि में डाले गये पदार्थ, पदार्थ विज्ञान के अनुसार नष्ट नहीं होते अपितु रूपान्तरित होकर सूक्ष्म रूप में कई गुना शक्तिशाली बनकर अन्तरिक्ष में वायु एवं सूर्य रश्मियों के माध्यम से फैलकर व्यापक हो जाते हैं। यज्ञ से समस्त वायुमण्डल शुद्ध होता है। यह औषधि रूप है, अत: यज्ञ करने से ऋतु संधियों में उत्पन्न रोगों का नाश होता है।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर का नवदिवसीय वार्षिकोत्सव बाल सम्मेलन, महिला सम्मेलन, वेद कथा, 11 कुण्डीय महायज्ञ आदि बहुविध धार्मिक एवं सांस्कृति कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीमती कल्पना शास्त्री एवं आचार्य राजू वैज्ञानिक द्वारा वेद प्रवचन, श्री अंकित शास्त्री द्वारा सुमधुर भजन तथा आ. गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में, सामवेद यज्ञ का संचालन सम्पन्न हुआ। श्री रामनाथ सहगल इस अवसर पर श्री आनंद चौहान, अध्यक्ष एमिटी संस्थान , श्री अजय सहगल, श्री अशोक सहगल आर्य समाज के सभासदों भी गरिमामय पावन उपस्थित रही।

- **नरेन्द्र मोहन वलेचा, मन्त्री, आर्य समाज राजेन्द्र नगर**

निर्वाचन

आर्य समाज राजेन्द्र नगर (नई दिल्ली) का वार्षिक निर्वाचन रविवार 5 मई 2019 को हुआ जिसमें आगामी वर्ष-2019-20 के लिए श्री अशोक सहगल (प्रधान), श्री नरेन्द्रमोहन वलेचा (महामन्त्री), श्री सतीश कुमार (कोषाध्यक्ष) सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए।

जीवन उपयोगी संकलन

- व्यवहार वह दर्पण है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है।
- दु:खो से भरी दुनिया में वास्तविक सम्पत्ति धन नहीं, सन्तुष्ठता हैं।

R.N.I.No. 43084/76
Date of Publication 01-06-2019

Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20
Posting Date: 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार
जून-2019

वेदों का महत्व

भारतीय संस्कृति में वेदों को अखिल धर्म का मूल माना गया है-'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।' परन्तु धर्म भी किसी रूढ़िबद्ध क्रियाकाण्ड का नाम नहीं है। मनुष्य के कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निर्णायक धर्म होता है और इसका ज्ञान वेदों से प्राप्त किया जा सकता है। अध्यात्म, धर्म, नीति, कर्त्तव्य तथा पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हेतु किये जाने वाले सम्पूर्ण प्रयासों का उल्लेख वेदों में मिलता है।

कम्प्यूटर युग में मनुष्य आज वेदों को भूल रहा है। हर व्यक्ति का मन धन को बटोरने के लिए निन्यानवे के फेर में उलझ गया है। हमें वेदों की ओर लौट चलने का मन बनाना ही होगा, क्योंकि वेद संसार का सार है। वेद का मतलब है-ज्ञान।

संस्कृत व्याकरण में 'विद्' नाम की चार धातुएँ हैं, जिनसे 'वेद' शब्द बना है। वे हैं-'विद् सत्तायाम्' (होना), 'विद् ज्ञाने' (जाना), 'विद विचारणे' (विचारना), 'विद् लाभे' (प्राप्त होना)। वेद शब्द का अर्थ हुआ कि वह विद्या जिससे मनुष्य जाति अपने अस्तित्व से चिंतन-मनन करते हुए विचार करती है तथा अन्त में सांसारिक व परलोक सुखों को प्राप्त करती है। वेद ईश्वरीय वाणी है।

उपरोक्त सभी धर्मों का मूल वेदों को कहा गया है। लेकिन देखा जाए तो धर्म सबका एक ही होता है-वैदिक धर्म। अध्यात्म से ओत-प्रोत जीवन सत्य, धैर्य, क्षमा, इन्द्रिय, नियन्त्रण, स्वाध्याय, दान-कर्त्ता, परमार्थ, यज्ञमयता, उदारता, पक्षपातहीन न्याय, अप्रमाद, कर्त्तव्यपरायणता, उदात्तता, तपस्या, साधना, संतोष, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह आदि गुण धर्म के शाश्वत अंग हैं, जो ईसान को दानवता से बचाते हुए मानव बनाए रखते हैं। इन्हीं धार्मिक गुणों से एक स्वस्थ समाज व विशाल राष्ट्र की स्थापना हो पाती है। 'यज्ञ' धर्म का पहला अंश माना गया है। सभी श्रेष्ठ कर्म यज्ञ कहलाते हैं। अत: कोई भी अच्छा कार्य करने वाला व्यक्ति सच्चा धार्मिक होता है। अध्ययन जीवन को उत्थान की ओर ले जाता है। इसलिए स्वाध्यायप्रेमी व्यक्ति भी धर्म का पालक माना गया है। दान-धर्म का वह पड़ाव है, जिससे व्यक्ति मानवता से देवत्व की ओर कदम रखता है।

वेदों में संस्कृति के आस-पास रहने का संदेश दिया है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में एक ऋचा है, जो विकृति के सुनहरे ढक्कन को हटाकर मूल संस्कृति को पहचानने का संदेश देती है।-

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहिंत मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥

अर्थात् हे मानव तू सोने की तरह चमकने वाले इस विकृति रूपी ढक्कन को हटकर मूल सत्य एंव मूल धर्म एवं मूल संस्कृति को जानने का प्रयास कर।

संस्कृति संस्कृति होती है तो सभ्यताएँ विकृतियाँ होती हैं। संस्कृति एक होती हैं, सभ्यताएँ पृथक-पृथक् अनेक होती हैं। मानव की संस्कृति एक है, जिसे मूल संस्कृति कहते हैं। इस संस्कृति के मूल तत्त्व या आधार अनेक होते हैं, जो इसकी शाखा-प्रशाखाएँ मानी गई हैं। जैसे-त्याग, दया, क्षमा, करूणा, सहानुभूति, मानवता, ममता, अहिंसा, परोपकार, धैर्य, संन्तोष आदि। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी के लिए यह मूल तत्त्व अनिवार्य हैं।

वैदिक संस्कृति को अपनाने के कारण ही राम मर्यादा पुरुषोत्तम बने। सुख-दु:ख में अविचलित, क्षात्रशौर्य सम्पन्न, विजय के लिए संकल्पवान् तथा विजयी होकर दयालु व प्रजा कृपालु राम चमकते हुए प्रभामेरु थे। चन्द्रमा की चांदनी की तरह निष्कलंक चरित्रवती, धैर्यवती, पतिव्रता, तपस्विनी सीता भी प्रभामेरु के समान दमकती आदर्श नारी थी। राजभवन को छोड़ दण्डकारण्य को अपनाने वाला लक्ष्मण, हठी माता की जिद को पूरा करने वाले राजभवन में रहकर चरण-पादुकाओं को प्रशासन का माध्यम बनाने वाला, भरत, किसी भी प्रकार की चर्चा में अधिक न रहने की तमन्ना को लिए निस्पृह चरित्र वाला शत्रुघ्न, सेवा को ही परम धर्म मानने वाले हनुमान, समुद्र-मंथन जैसा महाभारत मन्थन करवाने वाले कृष्ण कर्मयोगी व योगिराज श्रीकृष्ण कहलवाकर प्रभामेरु बन गए और सांसारिक सुखों को त्याग तथा अरबों-खरबों की सम्पत्ति को ठुकराने वाले स्वामी दयानन्द आदि अनेक महापुरुष जगमगाते प्रभामेरु थे। वेदों में

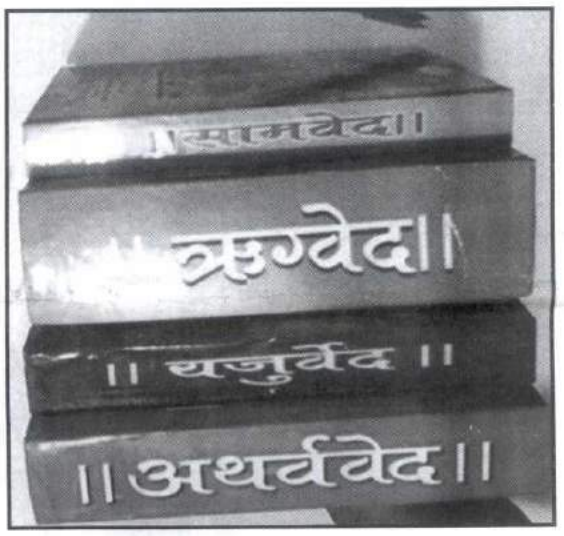

प्रतिपादित 'अस्तेय' को एक महाव्रत बतलाया गया है। यजुर्वेद के प्रथम अध्याय की पहली ऋचा में कहा गया है-'मा व: स्तेन ईशत्।' अर्थात् चोर हमारा प्रशासक राजा न बने। इस अस्तेय व्रत के पालन से केवल आत्मिक उन्नति ही नहीं अपितु समाज की व्यवस्था भी सुव्यवस्थित होती है। यह महाव्रत ईमानदारी का आधार है।

वेदों में छह मुख्य दुर्गुणों को त्यागने का संदेश दिया है। संसार नदी को तैरते समय डुबा देने वाले दुर्गुणों का आलंकारिक उल्लेख ऋग्वेद (7.104.22) तथा अथर्ववेद (8.4.22) में इस प्रकार है-

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोळयातुम। सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।। अर्थात् उल्लू का आचरण (मोह), भेड़िये का चलन (क्रोध), कुत्ते का व्यवहार (ईर्ष्या), चिड़ियों का दुर्गुण (काम), मोर का दुर्गुण (अहंकार) तथा गिद्ध का दुर्गण (लोभ) रूपी राक्षसों को हे जीवात्मन् तू छोड़ दे। बीज को पत्थर से रगड़ देने के समान तू अपनी दारूण शक्ति से इन्हें ऐसे मसलकर नष्ट कर दे कि ये जीवन में दोबारा अंकुरित न हो सकें। वेदों में तमस् से प्रकाश की ओर गमन का संदेश दिया है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। अंधकार अज्ञान का प्रतीक है। आर्यसमाज के तीसरे नियम में कहा है-''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना अब आर्यो का परम धर्म है।

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिन्टर्स-2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005, से मुद्रित एवं
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7, दूरभाष: 9711258445, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादक: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह-सम्पादक: डॉ. देवेश प्रकाश आर्य